सामर्थी बनाना : जीवन शैली अपनाना

अधिवेशन 1	''सामर्थ के लिए परमेश्वर की योजना''
	यीशु की निर्भरता पवित्रआत्मा पर और अपने अनुयायीयों पर उसी सामर्थ को उंडेलने की उसकी प्रतिज्ञा।
अधिवेशन 2	''धारा मे कदम''
	पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में का पूर्ण विश्लेषण और इसे कैसे प्राप्त किया जाता है।
अधिवेशन 3	''एक वैकल्पिक जीवन शैली''
	प्रेरितों के काम पहले अध्यायों का ध्यानपूर्वक अघ्ययन करना और आत्मा से भरी हुई जीवन शैली को पहचानना जो पहले विश्वासीयों के द्वारा प्रकट की गई।
अधिवेशन 4	''एक आर्थिक क्रान्ति''
	मसीही भण्डारीपन का दायित्व एवं रोमांचकारी उपहार जिसकी मसीही भण्डारीपन के रूप में परमेश्वर के वचन मे रूपरेखा दी गई है।
अधिवेशन 5 और 6	''परमेश्वर कलिसीयाओं को कैसे देखता है''
	कलिसीया वास्तव में क्या है की रोमांचकारी खोज करना। ये खोज जो एक जीवन की प्राथमिकता और रूझान को बदल सकती है।
अधिवेशन 7 और 8	''आत्मिक विकास के लिए आवश्यक कारण''
	आत्मिक बढ़ौतरी के लिए कार्यशाला का अधिवेश्न जिसमें आत्मिक बढ़ौतरी के लिए आरम्भिक नियमों को प्रदर्शित और उत्साहित किया गया है।
अधिवेशन 9	''आग के द्वारा जांच''
	अग्नि के द्वारा जांच में परमेश्वर की लौ एक विश्वासी के जीवन में बढती जाती है जैसे—जैसे वह परिपक्वता और पवित्रता में बढ़ता चला जाता है।

सामर्थी बनाना : जीवन शैली अपनाना
साप्ताहिक कार्य

अधिवेशन 1

1. अधिवेशन 1 कें प्रश्न पत्र पूरा करें,

अधिवेशन 2

1. अधिवेशन 2 के प्रश्न पत्र पूरा करें,

अधिवेशन 3

1. अधिवेशन 3 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
2. ''पैसों के प्रति नया व्यवहार'' सावधानी से पढ़िए।
3. अपना ''तीमुथियुस का पत्र'' पूरा करें।

अधिवेशन 4

1. अधिवेशन 4 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
2. ''तीमुथियुस का पत्र'' पूरा करें।

अधिवेशन 5

1. सावधानी से पढ़ें ''कलिसीया — एक्लीसीया''।
2. अधिवेशन 5 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
3. ''तीमुथियुस का पत्र'' की अन्तिम बुलाहट।

अधिवेशन 6

1. अधिवेशन 6 के प्रश्न पत्र पूरा करें,

अधिवेशन 7

1. अधिवेशन 7 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
2. सावधनी से पढ़ें, ''प्रार्थना की सरलता''।

अधिवेशन 8

1. अधिवेशन 8 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
2. यहून्ना 15: 1—8 के द्वारा अपने स्वयं के लिए भोजन करना।

अधिवेशन 9

1. अधिवेशन 9 के प्रश्न पत्र पूरा करें,
2. 2 कुरिन्थियों 9: 6—15 और 1 पतरस 1: 21—23 के द्वारा इस सप्ताह अपने स्वयं के लिए भोजन करना।

सामर्थी बनाना
अधिवेशन 1

सामर्थ के लिए परमेश्वर की योजना

'सामर्थ के लिए परमेश्वर की योजना'

अब हम मसीह में सम्पूर्ण जीवन सेमिनार के ''सामर्थी बनाना'' वाले हिस्सें में मुड़ते हैं।

पवित्रआत्मा के जन्म दिन सम्बन्धी उपहार को समझने के लिए हम पहले पृष्ठ भूमि बनाऐंगे जिसे हमने पिछले अधिवेश्न में एक परिचय के रूप में देखा है।

प्रशिक्षण पुस्तक में पहले दो संदर्भों को पढ़ें

बपतिस्मा शब्द के नए नियम में तीन विभिन्न प्रयोगों पर ध्यान दें।

- हरेक घटना में उम्मीद्वार एक ही है... विश्वासी
- परन्तु प्रतिनिधि और तत्व जिनमें बपतिस्मा लिया जा रहा है अलग–2 हैं।

<u>यहां पर पवित्रआत्मा के द्वारा बपतिस्मा है।</u>

- 1कुरि. 12 में पौलुस कहता है, ''एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया और सबको एक ही आत्मा पिलाया गया।'' इस तरह हम परमेश्वर के परिवार में जन्म लेते हैं हम मसीह की देह में डुब जाते है।
- इसलिए प्रतिनिधि वह है जो बपतिस्मा देता है वह पवित्रआत्मा है।
- और तत्व हम जिसमे बपतिस्मा ले रहे हैं यीशु है।

<u>तब यहां पानी का बपतिस्मा है।</u>

- इसमें प्रतिनिधि पास्टर है या फिर कलिसिया बपतिस्में के लिए जिस किसी को नियुक्त करती है।
- और जिस तत्व में बपतिस्मा दिया जाता है वह पानी है।
- और बपतिस्मा प्रभु यीशु मसीह मे हमारी मृत्यु, गाड़ा जाना, जी उठने की समानता की विशेषता को दिखलाता है।

सामर्थ के लिए परमेश्वर की योजना

जब एक बार हम यीशु मसीह की मौत और पुनरूत्थान में बपतिस्मा ले चुके तो हम कैसे एक नए जीवन को बिताते हैं जिसके लिए उसने हमें बुलाया है?

निश्चत रूप से ये हमारी अपनी सामर्थ से नहीं हैं! हममे से बहुत अपनी व्यक्तिगत गवाही दे सकते हैं कि हम कैसे अप्रभाशाली हैं उसको पूरा करने में जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम करें। यहीं पर तीसरी प्रकार का बपतिस्मा जिसके बारे में घर्मशास्त्र बोलता है, दृश्य पटल पर आ जाता है।

	प्रतिनिधि	विषय	तत्व
पवित्रआत्मा के **''द्वारा'' बपतिस्मा** 1कुरिन्थियों 12:12–13 1कुरिन्थियों 6:19–20 रोमियों 8:9	**पवित्रआत्मा**	विश्वासी	**मसीह**
पानी का बपतिस्मा मत्ती 28:19 रोमियों 6:3–4 प्रेरित 2:38 ; 22: 16 1 पतरस 3:21	**कलिसिया**	विश्वासी	**पानी**
पवित्रआत्मा ''के साथ'' बपतिस्मा प्रेरित 1:5 प्रेरित 8:14–17 प्रेरित 11:15–16	**मसीह**	विश्वासी	**पवित्रआत्मा**

''सभी लोग मसीहा के आने की आशा लगाए थे और उत्सुक थे कि कहीं यहून्ना तो मसीह नही था – यहून्ना ने उत्तर दिया, मैं सच में तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूं पर मुझ से एक सामर्थी आने वाला है जिसके जूतों के बन्द मैं खोलने के लायक नहीं हूं वह तुम्हें पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा।'' – लूका 3: 15–16

1. यीशु का उदाहरण

''ऐसा हुआ कि तब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और जब वह प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल गया, तब पवित्रआत्मा कबूतर की नाईं उसपर उतरा और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं'' जब यीशु ने अपनी सेवा आरम्भ की तो वह लगभग तीस साल का था और जैसा कि समझा जाता था वह युसुफ का पुत्र था'' – लूका 3:12–23

''और मैं तो उसे नहीं पहचानता था परन्तु मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा उसी ने मुझे कहा कि जिस पर तू पवित्रआत्मा को उतरते देखे, पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देने वाला यही है ' – यहून्ना 1:33

तीसरा प्रयोग पवित्रआत्मा के ''साथ'' बपतिस्में में हैं

- प्रतिनिधि यीशु है

- जिस तत्व में डुबोया जाता है वह पवित्रआत्मा है

- इस बपतिस्में में आत्मा, गवाही और सेवकाई के लिए सामर्थ देता है।

  लूका 3 में हम पढ़ते हैं कि लोग गडबडी में थे कि क्या यहून्ना बपतिस्मा देने वाला मसीह था। यहून्ना ने कहा, ''नहीं, मैं तुम्हे पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मेरे बाद जो आ रहा है वह तुम्हें पवित्रआत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।''

  यहून्ना ने कहा,'' नहीं, मैं तुम्हे पानी से बपतिस्मा देता हूं परन्तु मेरे बाद जो आ रहा है वह तुम्हें पवित्रआत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।''

प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ के अन्त में यह याद दिलाया गया है कि यीशु कभी भी अपने चेलों को उस काम को करने के लिए नहीं बुलाता जिसे उसने स्वंय पहले से अनुभव न किया हो। उसने हमारे लिए नमूना छोड़ दिया।

- इस तरह हम देखते हैं कि यीशु यहून्ना के पास बपतिस्में के लिए नदी में आते हैं। और जैसे ही वह पानी का बपतिस्मा लेते हैं पवित्रआत्मा उन पर कबूतर की नाई आ उतरता है। उन्होंने पानी में और पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा लिया था। अब यीशु अपनी सेवकाई शुरू करते हैं।

- जब यहून्ना ने इस अनुभव पर टिप्पणी दी तो उसने ये कहा कि, ''और मैं तो उसे नहीं पहचानता था परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा उसी ने मुझे कहा कि जिस पर तू पवित्रआत्मा को उतरते देखे, पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देने वाला यही है''

- जब यहून्ना ने यीशु के बारे में घोषणा की कि तो उसने लोगों से यही कहा कि जब यीशु आएगा, तो वह लोंगों को बपतिस्मा परन्तु उसको बपतिस्मा पवित्रआत्मा का होगा।

सामर्थ के लिए परमेश्वर की योजना

जब एक बार हम यीशु मसीह की मौत और पुनरूत्थान में बपतिस्मा ले चुके तो हम कैसे एक नए जीवन को बिताते हैं जिसके लिए उसने हमें बुलाया है?

निश्चत रूप से ये हमारी अपनी सामर्थ से नहीं हैं! हममे से बहुत अपनी व्यक्तिगत गवाही दे सकते हैं कि हम कैसे अप्रभाशाली हैं उसको पूरा करने में जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम करें। यहीं पर तीसरी प्रकार का बपतिस्मा जिसके बारे में घर्मशास्त्र बोलता है, दृश्य पटल पर आ जाता है।

	प्रतिनिधि	विषय	तत्व
पवित्रआत्मा के **''द्वारा'' बपतिस्मा**	**पवित्रआत्मा**	विश्वासी	**मसीह**

1कुरिन्थियों 12:12—13
1कुरिन्थियों 6:19—20
रोमियों 8:9

पानी का बपतिस्मा	**कलिसिया**	विश्वासी	**पानी**

मत्ती 28:19
रोमियों 6:3—4
प्रेरित 2:38 ; 22: 16
1 पतरस 3:21

पवित्रआत्मा ''के साथ'' बपतिस्मा	**मसीह**	विश्वासी	**पवित्रआत्मा**

प्रेरित 1:5
प्रेरित 8:14—17
प्रेरित 11:15—16

''सभी लोग मसीहा के आने की आशा लगाए थे और उत्सुक थे कि कहीं यहून्ना तो मसीह नही था – यहून्ना ने उत्तर दिया, मैं सच में तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूं पर मुझ से एक सामर्थी आने वाला है जिसके जूतों के बन्द मैं खोलने के लायक नहीं हूं वह तुम्हें पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देगा।'' – लूका 3: 15—16

1. यीशु का उदाहरण

''ऐसा हुआ कि तब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और जब वह प्रार्थना कर रहा था तो आकाश खुल गया, तब पवित्रआत्मा कबूतर की नाईं उसपर उतरा और यह आकाशवाणी हुई, ''तू मेरा पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं'' जब यीशु ने अपनी सेवा आरम्भ की तो वह लगभग तीस साल का था और जैसा कि समझा जाता था वह युसुफ का पुत्र था'' – लूका 3:12—23

''और मैं तो उसे नहीं पहचानता था परन्तु मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा उसी ने मुझे कहा कि जिस पर तू पवित्रआत्मा को उतरते देखे, पवित्रआत्मा से बपतिस्मा देने वाला यही है ' – यहून्ना 1:33

उसका ''दोहरा बपतिस्मा''

- यीशु का बपतिस्मा महत्वपूर्ण है यह दोहरा बपतिस्मा था पानी में बपतिस्मा और पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा।

- पवित्रआत्मा कबुतर की नाई यीशु पर आ उतरा।

- यह हमें इस महत्वपूर्ण प्रश्न के पास ले आता है... क्या बपतिस्में से पहले पवित्रआत्मा था या यह समय उसके पवित्रआत्मा ग्रहण करने का था?

निसंदेह उसके पास पवित्रआत्मा था, वह पवित्रआत्मा द्वारा गर्भ में आया।

- मरियम ने अपने गर्भ में बच्चे को इतिहास की और औरतों से भिन्न तरीके से धारण किया। यह किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं था, परन्तु पवित्रआत्मा के आश्चर्य जनक तरीके से बोया गया। पवित्रआत्मा यीशु का जन्म से ही हिस्सा था।

- आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में ऐसा कहती है कि, ''... आत्मा यीशु मे उसके जन्म ही से था जैसा कि आत्मा हर विश्वासी के साथ उसके नए जन्म के समय से होता है। ''जब हम किसी के लिए प्रार्थना करते हैं कि वह यीशु को ग्रहण करें, हम पवित्रआत्मा से कहते हैं कि वह उनके दिलों की गवाही दे कि उनका नया जन्म हो गया है। पवित्रआत्मा नए जन्म में उनका प्रतिनिधि बन जाता है।

- परन्तु उसी संदर्भ के दूसरे वाक्स पर ध्यान दें, ''और जैसा आत्मा उसके बपतिस्में के समय ''उस पर'' उतरा तो वैसे ही हर विश्वासी के ऊपर जब वह आत्मा से बपतिस्मा पाएगा उतरेगा।''

- पवित्रआत्मा का विश्वासीयों पर उतरना हमेशा एक समय पर नहीं होता जैसा कि नए जन्म के समय होता है। यीशु की घटना मैं यह 30 साल के बााद हुआ। हम इसे कैसे जानते है? (अगले पृष्ठ को देखें)

1. उसका ''दोहरा'' बपतिस्मा

क्या यीशु के पास बपतिस्में से पहले पवित्रआत्मा था?

निसंदेह उसके पास पवित्रआत्मा था,

वह पवित्रआत्मा द्वारा गर्भ में आया।

''मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे हो सकता है क्यों कि मैं तो कुंवारी हूं ? स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''पवित्रआत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो पैदा होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा' — लूका 1: 34—35

आत्मा यीशु ''मे'' उसके जन्म ही से था जैसा कि आत्मा हर विश्वासी ''में'' उसके नए जन्म के समय से होता है। तब जैसा आत्मा उसके बपतिस्में के समय ''उस पर'' उतरा वैसे ही हर विश्वासी ''के ऊपर'' जब वह आत्मा से बपतिस्मा पाएगा उतरेगा।

2. उसका बढ़ना और विकास एक साधारण व्यक्ति जैसा

इसलिए वह सब बातों में भाईयों की तरह बनाया गया।

— इब्रानियों 2:17—18 एवं 4:15

— नौजवान की तरह

यीशु बुद्धि, डीलडौल और मनुष्यों के अनुग्रह मं बढ़ता गया। — लुका 2:52

— पड़ोसियों के सम्बन्ध में

''वह अपने नगर में आकर लोगों को उनके आराधनालयों में उपदेश देने लगा और वे चकित होकर कहने लगे, इस मनुष्य को ऐसा ज्ञान और ऐसी आश्चर्यजनक सामर्थ कहां से प्राप्त हुई : क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं? क्या इसकी माता का नाम मरियम नहीं ?... तो इस मनुष्य को ये सब कहां से प्राप्त हुआ? और उसके कारण लोगों को ठोकर लगी... और लोगों के अविश्वास के कारण उसने वहां सामर्थ के काम नहीं किए'' — मती 13 : 54—58

— आज्ञाकारिता में

''और पुत्र होने पर भी, उसने दुःख उठा—उठाकर आज्ञा माननी सीखी

— इब्रनियों 5:8

3. उसकी सेवकाई प्रारम्भ की गई

— यीशु का दोहरा बपतिस्मा **अलग कर देने वाली रेखा** .....था

लूका 4:1—2 *यीशु पवित्रआत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा और आत्मा उसे जंगल में इधर—उधर ले जाता रहा, वहां चालिस दिन तक शैतान उसकी परिक्षा करता रहा उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया।*

उसका बढ़ना और विकसित होना एक साधारण व्यक्ति जैसा

हम देखते हैं कि यीशु एक साधारण व्यक्ति के रूप में बढ़ा। बाइबल में उसके आरम्भिक सालों के बारे में कुछ ज्यादा जानकारी नहीं दी गई।

- 12 साल की आयु में उसे एक अलग तरह का अनुभव हुआ था। वह पहली बार अपने माता–पिता के साथ यरूशलेम गया था। वह मंदिर के अगुवों के साथ बातचीत में इतना मग्न हो गया कि अपने घर जाने वाली ट्रेन भी उससे छुट गई... गधे वाली ट्रेन। उसके माता पिता उसे ढुंढने लगे ओर उनकी चिन्ता खोजबीन मदिर में जाकर खत्म हुई।

- यह इस आयु के बच्चों के लिए शायद एक साधारण बात नहीं थी, पर जहां तक उसके बाकी जीवन का सम्बंघ था उसने यह सीखा कि बढ़ई कैसा होता है और वह दूसरे बच्चो के साथ बढ़ा।

- यहां पर कुछ रीति रिवाज हैं जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।

- मती 13 में उसके अपने शहर नासरत में उसकी सेवकाई के शुरू में ही घटी घटना के बारे में बयान है। लोगों ने कहा, ''यह कैसे हो सकता है ? यह तो बस बढ़ई का पुत्र है। हम उसकी माता और भाईयों को जानते है।'' वह उससे गुस्से में और परेशान थे, कि क्यों यह हमारे साथ ऐसा कर रहा है ? यह हमारे बीच में ही तो बड़ा हुआ है और इसलिए, ''वह उनके अविश्वास के कारण आश्चर्यकर्म नहीं कर सका।''

- यदि यीशु मसीह उन नौजवानों से अलग होकर भिन्नता में बड़ा हुआ होता तो वह अधिक हैरान नही होते। उन्होंने इन सब बातों की उम्मीद उससे रखी होती। पर चूंकि ऐसा नहीं हुआ इसलिए यह प्रमाण है कि यीशु दूसरे नौजवानों के साथ एक साधारण रूप में बड़ा हुआ। वह हर भाव में अपने भाईयों के जैसा था (इब्रानियों 5:8) जिसमें दुख उठाकर आज्ञा मानना भी शामिल था।

पर अब उसकी सेवकाई प्रारम्भ की गई

यीशु ने यहून्ना से बपतिस्मा इसलिए लिया कि अपने आपको लोगों के साथ एक कर सके और उसका पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा इसलिए हुआ कि वह उसे सेवकाई के लिए सामर्थी बना सके।

- यीशु का दोहरा बपतिस्मा **अलग कर देने वाली रेखा** थी। जो पहले के जीवन और बाद के जीवन को अलग कर देती थी।

- उसके बपतिस्में के एकदम बाद हम लुका 4 में देखते हैं कि वह पवित्रआत्मा की अगुवाई में वो जंगल में गया और जंगल में अपने अनुभव के बाद हमें यह बताया गया है कि वह पवित्रआत्मा की सामर्थ में होकर गलील को आया ।

- यह शब्द यीशु मसीह के लिए पहले कभी प्रयोग नही किए गए। वह पवित्रआत्मा की अगुवाई मे जंगल में गया और आत्मा की सामर्थ में वापस लौटा।

1. उसका ''दोहरा'' बपतिस्मा

क्या यीशु के पास बपतिस्में से पहले पवित्रआत्मा था?

निसंदेह उसके पास पवित्रआत्मा था,

वह पवित्रआत्मा द्वारा गर्भ में आया।

''मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे हो सकता है क्यों कि मैं तो कुंवारी हूं ? स्वर्गदूत ने उससे कहा, ''पवित्रआत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसी कारण वह पवित्र पुत्र जो पैदा होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा' – लूका 1: 34–35

आत्मा यीशु ''मे'' उसके जन्म ही से था जैसा कि आत्मा हर विश्वासी ''में'' उसके नए जन्म के समय से होता है। तब जैसा आत्मा उसके बपतिस्में के समय ''उस पर'' उतरा वैसे ही हर विश्वासी ''के ऊपर'' जब वह आत्मा से बपतिस्मा पाएगा उतरेगा।

2. उसका बढ़ना और विकास एक साधारण व्यक्ति जैसा

इसलिए वह सब बातों में भाईयों की तरह बनाया गया।

– इब्रानियों 2:17–18 एवं 4:15

– नौजवान की तरह

यीशु बुद्धि, डीलडौल और मनुष्यों के अनुग्रह मं बढ़ता गया। – लुका 2:52

– पड़ोसियों के सम्बन्ध में

''वह अपने नगर में आकर लोगों को उनके आराधनालयों में उपदेश देने लगा और वे चकित होकर कहने लगे, इस मनुष्य को ऐसा ज्ञान और ऐसी आश्चर्यजनक सामर्थ कहां से प्राप्त हुई : क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं? क्या इसकी माता का नाम मरियम नहीं ?... तो इस मनुष्य को ये सब कहां से प्राप्त हुआ? और उसके कारण लोगों को ठोकर लगी... और लोगों के अविश्वास के कारण उसने वहां सामर्थ के काम नहीं किए'' – मती 13 : 54–58

– आज्ञाकारिता में

''और पुत्र होने पर भी, उसने दुःख उठा–उठाकर आज्ञा माननी सीखी

– इब्रनियों 5:8

3. उसकी सेवकाई प्रारम्भ की गई

– यीशु का दोहरा बपतिस्मा **अलग कर देने वाली रेखा** था

लूका 4:1–2 *यीशु पवित्रआत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटा और आत्मा उसे जंगल में इधर–उधर ले जाता रहा, वहां चालिस दिन तक शैतान उसकी परिक्षा करता रहा उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया।*

<u>उसने अपनी सेवकाई प्रारम्भ की (जारी)</u>

वह बदला हुआ था :

- वह अपने शहर वापस लौट गया और मंदिर में शास्त्र उठाकर पढ़ने लगा ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है... यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ''

- कफरनहूम में वे उसकी शिक्षा सुनकर दंग रह गए थे पद 36 — वे चकित थे क्योंकि वह पूरे अधिकार के साथ और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता था और वे निकल जाती थी।

- यह यीशु के जीवन में तब तक नहीं घटा जब तक कि अलग कर देने वाली रेखा न आ गई, जब तक उसने पानी में और पवित्रआत्मा में बपतिस्मा न ले लिया।

पद 14 : *तब यीशु आत्मा की सामर्थ से गलील को लौटा और आस पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई।*

पद 18–19 : *''प्रभु का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने को संदेश दूं और दलितों को छुड़ांऊ और प्रभु के बनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं।''*

पद 32 : *'वे उसकी शिक्षा से विस्मित होते थे क्योंकि उसका उपदेश अधिकारपूर्ण था''।*

पद 36 : *''इस पर सब लोगे चकित हुऐ और आपस में कहने लगे, यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता हैं और वे निकल जाती हैं''।*

– उसकी निर्भरता .....**पवित्रआत्मा**.....

यहून्ना 5:19 : *मैं तुमसे सच–सच कहता हूं कि पुत्र स्वंय कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते हुए देखता है क्योंकि जो कुछ पिता करता है उन्हीं कामों को पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है''।*

यहून्ना 14:40 : *''क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? जो वचन में तुमसे कहता हूं वह अपनी ओर से नही कहता परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही अपने काम करता है''।*

प्रेरित 1:2 : *''जब तक कि वह पवित्रआत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को आज्ञा देने के पश्चात ऊपर न उठा लिया गया।'*

प्रेरित 10:38 : *''किस प्रकार पवित्रआत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त किया और वह किस प्रकार भलाई करता और उन सब को जो दुष्ट आत्माओं द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।''*

यीशु परमेश्वर का पुत्र हमारी तरह बन गया और अपने आप को मानव रूप में सीमित किया और वह हमारी तरह पवित्रआत्मा की भरपूरी पर निर्भर रहा ताकि शत्रुओं पर विजय पा सके और परमेश्वर के राज्य के कामों को प्रकट कर सके। उसको यह जीवन जीने के लिए कोई और साधन नहीं दिये गये जैसा हम पाने पर हैं।''

2. चेलों को शक्ति प्रदान करना

यीशु ने अपने चेलों से जिन्होनें पवित्रआत्मा (यहून्ना 20:22) को पहले से पा लिया था कहा; *''अब से थोड़े दिनों के पश्चात तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे''*

– प्रेरित 1:5

पवित्रआत्मा पर उसकी निर्भरता

- जब यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ कर दी तो वह इस बात पर जोर देने लगा कि वह पूर्ण रूप से पवित्रआत्मा पर निर्भर है। उसे अपने लिए पिता की इच्छा को ढुंढना था। उसने सारी रात प्रार्थना में व्यतीत की कि पवित्रआत्मा से अगुवाई प्राप्त कर सके।

- ये पद यीशु के पवित्रआत्मा पर निर्भर रहने को दिखाते हैं

  — यहून्ना 5:19... ''....पुत्र अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।''

  — यहून्ना 14:10... ''....जो शब्द मैं कहता हूं वे मेरे अपने नहीं है;... वह अपना काम मेरे द्वारा करता है।''

  — प्रेरित 1:2... ''...पवित्रआत्मा से निर्देश।''

  — प्रेरित 10:38...''...पवित्रआत्मा के साथ पिता के द्वारा अभिषिक्त।''

- यीशु ने अपने आपको मानवीय शरीर में सीमित किया (प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ पर अन्तिम पैरे को पढ़ें) क्यों?

  — उसे अपनी कमजोरीयों को समझने और अपने उपर हमारी दीनता को ले लेने की जरूरत थी (हमारे पाप नहीं क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया) इसलिए वह हमारा विकल्प ठहर सका। उसने हमारा स्थान ले लिया उसने पवित्र और सिद्ध जीवन जीया जो कभी नहीं जी सकते थे।
  — और तब वह उस मृत्यु को पाया जो हमें मिलनी थी।

  — ऐसा करने के लिए उसे हमारे जैसा बनना पड़ा।

इब्रानियों 2:17—18...''इस कारण उसको चाहिए था कि सब बातों में अपने भाईया के समान बनें; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती है, एक दयालू और विश्वासयोग्य महायाजक बने। ...क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है।''

इब्रानियों 4:15 में, ''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; वरन् सब वह बातों में हमारी नाई परखा तो गया, तो भी निष्पाप निकला।''

इसलिए जब वह धरती पर था तब यीशु ने अपने ईश्वरत्व के प्रगटीकरण को कुछ समय के लिए अलग रख दिया और अपने आपको मानवीय दायरे में जो हम महसुस करते है के आधीन कर दिया (बिना किसी पाप को छोड़कर) और हमारे बीच में पवित्रआत्मा द्वारा सामर्थी बनाया गया जीवन जीया।

पद 14 : *तब यीशु आत्मा की सामर्थ से गलील को लौटा और आस पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई।*

पद 18–19 : *''प्रभु का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने को संदेश दूं और दलितों को छुड़ांऊ और प्रभु के बनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं।''*

पद 32 : *''वे उसकी शिक्षा से विस्मित होते थे क्योंकि उसका उपदेश अधिकारपूर्ण था''।*

पद 36 : *''इस पर सब लोगे चकित हुऐ और आपस में कहने लगे, यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता हैं और वे निकल जाती हैं''।*

– उसकी निर्भरता .....**पवित्रआत्मा**.....

यहून्ना 5:19 : *मैं तुमसे सच–सच कहता हूं कि पुत्र स्वंय कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते हुए देखता है क्योंकि जो कुछ पिता करता है उन्हीं कामों को पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है''।*

यहून्ना 14:40 : *''क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? जो वचन में तुमसे कहता हूं वह अपनी ओर से नही कहता परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही अपने काम करता है''।*

प्रेरित 1:2 : *''जब तक कि वह पवित्रआत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को आज्ञा देने के पश्चात ऊपर न उठा लिया गया।'*

प्रेरित 10:38 : *''किस प्रकार पवित्रआत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त किया और वह किस प्रकार भलाई करता और उन सब को जो दुष्ट आत्माओं द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।''*

यीशु परमेश्वर का पुत्र हमारी तरह बन गया और अपने आप को मानव रूप में सीमित किया और वह हमारी तरह पवित्रआत्मा की भरपूरी पर निर्भर रहा ताकि शत्रुओं पर विजय पा सके और परमेश्वर के राज्य के कामों को प्रकट कर सके। उसको यह जीवन जीने के लिए कोई और साधन नहीं दिये गये जैसा हम पाने पर हैं।''

2. चेलों को शक्ति प्रदान करना

यीशु ने अपने चेलों से जिन्होनें पवित्रआत्मा (यहून्ना 20:22) को पहले से पा लिया था कहा; *''अब से थोड़े दिनों के पश्चात तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे''*

– प्रेरित 1:5

चेलों को सामर्थी बनाना

यहून्ना 20 में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वह जिस सामर्थ में चलता था उसको वे भी प्राप्त करेंगे। यह उसका उनके लिए उपहार होगा। जैसे उसने पवित्रआत्मा की सामर्थ को अपने जीवन के द्वारा प्रगट किया था वैसे ही अब उस सामर्थ को उसके अनुयायीयों को दे देगा।

उसके जी उठने के बाद चेले उपरौठी कौठी में अकेले, डरे हुए, भौचक्के, छिपे हुए थे कि वे अब क्या करेंगे?

- यीशु उनके मध्य में आ खड़ा हुआ। यीशु ने उनसे कहा ''मत डरो'' तब उसने उन्हे अपने घाव दिखाए और उन्हें अपना अधिकार दिया। तब उन पर फूंका और कहा, ''पवित्रआत्मा लो''

- इस समय तो पवित्रआत्मा केवल लोगों को विशेष घटनाओं के लिए दिया जाता था — एक युद्ध लड़ने के लिए, किसी कलाकारी के काम के लिए, पवित्रशास्त्र के किसी एक हिस्से को लिखने के लिए, भजन संहिता की रचना के लिए और पवित्रआत्मा कुछ लोगों को इन कामों को करने के लिए अभिषिक्त करता था।

- परन्तु पवित्रआत्मा कभी भी उनमें स्थाई रूप से वास नही किया। अब यीशु ने कहा, ''पवित्रआत्मा लो।'' तब उस रात से पवित्रआत्मा चेलों के बीच में वास करने लगा। वह उस समूह के पहले लोग थे जो परमेश्वर की सामर्थ से फिर से पैदा किए गए थे।

- पर अब इन लोगों से यीशु ने प्रेरित 1:5 में कहा, ''थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रआत्मा मे बपतिस्मा पाओगे।'' इसलिए जो कुछ प्रभु यीशु मसीह उनसे चाहता था वह उस पहली रात को पूरा नहीं हुआ। क्योंकि ये वही लोग थे जिन्हें यीशु ने जल्दी ही पवित्रआत्मा में बपतिस्मा देने का वायदा किया था।

पद 14 : *तब यीशु आत्मा की सामर्थ से गलील को लौटा और आस पास के प्रदेश में उसकी चर्चा फैल गई।*

पद 18–19 : *''प्रभु का आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्दियों को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने को संदेश दूं और दलितों को छुड़ांऊ और प्रभु के बनुग्रह के समय की उद्घोषणा करूं।''*

पद 32 : *'वे उसकी शिक्षा से विस्मित होते थे क्योंकि उसका उपदेश अधिकारपूर्ण था''।*

पद 36 : *''इस पर सब लोगे चकित हुऐ और आपस में कहने लगे, यह कैसा वचन है? क्योंकि वह अधिकार और सामर्थ से अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता हैं और वे निकल जाती हैं''।*

– उसकी निर्भरता .....**पवित्रआत्मा**.....

यहून्ना 5:19 : *मैं तुमसे सच–सच कहता हूं कि पुत्र स्वंय कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते हुए देखता है क्योंकि जो कुछ पिता करता है उन्हीं कामों को पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है''।*

यहून्ना 14:40 : *''क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है? जो वचन में तुमसे कहता हूं वह अपनी ओर से नही कहता परन्तु पिता जो मुझ में रहता है वही अपने काम करता है''।*

प्रेरित 1:2 : *''जब तक कि वह पवित्रआत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को आज्ञा देने के पश्चात ऊपर न उठा लिया गया।'*

प्रेरित 10:38 : *''किस प्रकार पवित्रआत्मा और सामर्थ से अभिषिक्त किया और वह किस प्रकार भलाई करता और उन सब को जो दुष्ट आत्माओं द्वारा सताए हुए थे चंगा करता फिरा क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।''*

यीशु परमेश्वर का पुत्र हमारी तरह बन गया और अपने आप को मानव रूप में सीमित किया और वह हमारी तरह पवित्रआत्मा की भरपूरी पर निर्भर रहा ताकि शत्रुओं पर विजय पा सके और परमेश्वर के राज्य के कामों को प्रकट कर सके। उसको यह जीवन जीने के लिए कोई और साधन नहीं दिये गये जैसा हम पाने पर हैं।''

2. चेलों को शक्ति प्रदान करना

यीशु ने अपने चेलों से जिन्होनें पवित्रआत्मा (यहून्ना 20:22) को पहले से पा लिया था कहा; *''अब से थोड़े दिनों के पश्चात तुम पवित्रआत्मा से बपतिस्मा पाओगे''*

– प्रेरित 1:5

चेलों को निर्देश

लूका और प्रेरितो के काम में हम देखते हैं कि यीशु चेलो को निर्देश दे रहा है। यह निर्देश बिल्कुल सपष्ट ह। लुका 24:49 (पढ़े) ''.... जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ से परिपूर्ण न हो जाओ इसी नगर में ठहरे रहना।'' यहीं पर ठहर रहो !

उसने यह निर्देश प्रेरितो 1: 3, 8 में दोहरायां उसका उद्धार का मिशन अब पूरा हो चुका था। उसके साथ कितना बुरा बर्ताव किया गया परन्तु इसके बाद भी यीशु ने अपने जी उठने बाद 40 दिन धरती पर व्यतीत किए

प्रेरितों के काम 1 हमें बतलाता है क्यों (पढो)

- पहले उसे लोगों को अपने आपको दिखाना था ताकि वे ये जान ले कि वह सचमुच मे जी उठा है।

- दूसरा अभी भी राज्य के बारे में उन्हें महत्वपूर्ण बातें सिखाना था उसने उन सभी बातो की समीक्षा की जो उसने उन्हे पहले सिखाई थी तब उसने उनमें नई चीजें जोड़ दी वह अपनी जिम्मेदारी चेलों को देने के लिए तैयार था।

- परन्तु उसने उन्हें कहा कि वे तैयार नहीं थे। (पढ़ें प्रेरित 1:8)... वे सामर्थ पाऐगें जब पवित्रआत्मा उन पर आएगा।

1. चेलों को निर्देश

लूका 24:49 : *''... जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उसको तुम पर उन्डेलूंगा परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहो''।*

प्ररित 1:3,8 : *''... अपने दुःख भोग के पश्चात उसने अनेक ठोस प्रमाणों से उन पर अपने आप को जीवित दिखा दिया और चालिस दिन तक दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य के बारे मं उनसे बातें करता रहा''।*

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओंगे और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे गवाह होगे''।

यीशु ने कहा, तुम्हें .....**ठहरना**..... होगा !

केवल उसके बाद .....**पवित्रआत्मा तुम पर आ उतरेगा**.....

यहां पर कुछ इसके बारे में सोचना बहुत बढ़िया बात है। चेलों ने जिससे यीशु बात कर रहे थे, ने तीन साल उसके साथ बिताए, उन्होंने उसके आश्चर्य कामों को देखा था, उन्होनें यीशु की शिक्षा को निजी रूप से और जनता में सुना था, उन्होंने उसके रात और दिन रहने के अद्भुत अनुभव को प्राप्त किया था, वे उसके निर्देश अनुसार बीमारों को चंगा करने गए थे, सुसमाचार प्रचार किया था, और शैतान की दुष्ट आत्माओं पर भी सामर्थ को अभ्यास में लाए थे, परन्तु वह दृढ़ता से घोषणा करता है कि वे अभी भी पृथ्वी पर उसकी देह की सेवकाई को लेने के लिए तैयार नहीं थे।

2. चेलों की परिपूर्णता

कहां ? .....**यरूशलेम**.....

क्या हुआ ? .....**पवित्रआत्मा उन पर प्रचण्ड वायु**.....

.....**और आग की लपटों की भांति उतरा।**.....

एकाएक आकाश से एक प्रचण्ड आंधी सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे गूंज गया, और उन्हे आग के समान जीभे विभाजित होती हुई दिखाई दी और उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरी वो सब पवित्रआत्मा से भर गये और जैसा आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य–2 भाषाओं मं बोलने लगे''

– प्ररित 2:2–4।

इसलिए यीशु ने कहा **ठहरना** होगा तुम ये केवल **पवित्रआत्मा पाने के बाद** ही कर पाओगे।

प्रशिक्षण पुस्तिका के पृष्ठ पर मध्य में दिए गए पैरे को पढ़ें ''केवल बहुत बढ़िया इसके विषय में सोचना... ।''

यदि उसने उन्हे ठहरने के लिए कहा हलांकि उन्होंने यीशु के साथ शारिरीक रूप से तीन साल व्यतीत किए थे, उसके साथ चले थे, और उससे बातचीत की थी, उसके आश्चर्यकर्मों के गवाह थे, यहां तक कि उन्होनें स्वंय भी आश्चर्यकर्म किए थे, पर तब भी उसने उन्हें इन्तजार करने के लिए कहा क्योंकि उन्हे सामर्थ की जरूरत थी, उन्हें पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा पाने की जरूरत थी, फिर हमारे बारे में क्या?

कैसे हम सोचते हैं कि हम सुसज्जित हो जाएगें और उसकी सेवा करेगें जब तक हम उसे न प्राप्त न करे लें जिसकी प्रतिज्ञा चेलों को दी गई, पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा ?

चेलो की परिपूर्णता

- आओ अब हम चेलों को पूरे किए गए उसके वायदे को देखे। यह **यरूशलेम** में पूरा हुआ।

- क्या हुआ ? **पवित्रआत्मा उन पर प्रचण्ड वायु और आग की लपटों की भांति उतरा।**

- पढ़ें प्रेरित 2: 2–4

4 मसीह में सम्पूर्ण जीवन – सामर्थी बनाना : जीवन शैली अपनाना

1. चेलों को निर्देश

लूका 24:49 : *''... जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है मैं उसको तुम पर उन्डेलूंगा परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहो''।*

प्ररित 1:3,8 : *''... अपने दुःख भोग के पश्चात उसने अनेक ठोस प्रमाणों से उन पर अपने आप को जीवित दिखा दिया और चालिस दिन तक दिखाई देता रहा और परमेश्वर के राज्य के बारे मं उनसे बातें करता रहा''।*

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओंगे और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे गवाह होगे''।

यीशु ने कहा, तुम्हें .....**ठहरना**..... होगा !

केवल उसके बाद .....**पवित्रआत्मा तुम पर आ उतरेगा**.....

यहां पर कुछ इसके बारे में सोचना बहुत बढ़िया बात है। चेलों ने जिससे यीशु बात कर रहे थे, ने तीन साल उसके साथ बिताए, उन्होंने उसके आश्चर्य कामों को देखा था, उन्होनें यीशु की शिक्षा को निजी रूप से और जनता में सुना था, उन्होंने उसके रात और दिन रहने के अद्भुत अनुभव को प्राप्त किया था, वे उसके निर्देश अनुसार बीमारों को चंगा करने गए थे, सुसमाचार प्रचार किया था, और शैतान की दुष्ट आत्माओं पर भी सामर्थ को अभ्यास में लाए थे, परन्तु वह दृढ़ता से घोषणा करता है कि वे अभी भी पृथ्वी पर उसकी देह की सेवकाई को लेने के लिए तैयार नहीं थे।

2. चेलों की परिपूर्णता

कहां ? .....**यरूशलेम**.....

क्या हुआ ? .....**पवित्रआत्मा उन पर प्रचण्ड वायु**.....

.....**और आग की लपटों की भांति उतरा।**.....

एकाएक आकाश से एक प्रचण्ड आंधी सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे गूंज गया, और उन्हे आग के समान जीभे विभाजित होती हुई दिखाई दी और उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरी वो सब पवित्रआत्मा से भर गये और जैसा आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी वे अन्य–2 भाषाओं मं बोलने लगे''

– प्ररित 2:2–4।

- इसके परिणाम क्या थे?

  — सबसे पहले **<u>अत्यन्त स्तुति बह रही थी</u>**। (प्रेरित 2 : 110)

  जैसे ही चेले पवित्रआत्मा से भरने का अनुभव कर रहे थे वो परमेश्वर की उपस्थिति से भौचक्के रह गए कि वे अपने हाथ उठाकर उसकी आराधना करने लगे, और प्रभु उनके मुह में परमेश्वर के लिए नई भाषा में स्तुति भरने लगा और जो लोग यरूशलेम में पर्व के लिए इक्ट्ठे हुए थे उन्होंने चेलों को अपनी अपनी भाषा में परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुना।

  — दूसरा परिणाम **<u>निर्भिकता पूर्ण (साहस से भरा) प्रगटीकरण था</u>**। (प्रेरित 2 : 22—24; 36)

  जब हमने चेलों को पहले देखा तो हमने पाया कि वे उपरौठी कोठरी के दरवाजे को बन्द करके डरे हुए अन्दर छिपे बैठे थे। अब यहां वे मदिर में परमेश्वर के कामों को साहस से भरकर प्रगट कर रहे थे। पतरस उनमें से बोलने वाला था... पढ़ें प्रेरित 2:22—24। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि उनमें एक बदलाव आ रहा था? अब उनका डर कहां चला गया? अब उन्हें कहां से साहस मिला? वे अब पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा पाए हुए थे।

  — तीसरा परिणाम **<u>स्वीकारना और प्रत्युतर देना था</u>** (प्रेरित 2 : 37)

  उन्होंने पतरस से कहा, ''हे भाईयो हम क्या करें?'' यीशु मसीह ने कहा था कि पवित्रआत्मा लोंगों को धार्मिकता और न्याय के लिए कायल करेगा। इसलिए जब उन्होंने सामर्थ के साथ बोला तब सुनने वालों के हृदय कायल हो गए।

  इसलिए परिणाम ये है लोगों के दिलों में... बहने वाली स्तुति, साहस भरा प्रगटीकरण, स्वीकारना और प्रत्युतर देना आ गया।

जो कुछ हो रहा है इस की विशेषता यह है कि... **<u>यीशु जहां हैं भरपूरी वहां है</u>** जैसा कि प्रेरित 2:33 में कहा गया है।

- जी उठना वो प्रतिज्ञा थी जिसे परमेश्वर ने वायदा किया था कि वह पूरी करेगा और पिन्तेकुस्त इसका पक्का प्रमाण था।

- यीशु मसीह को ब्रह्माण्ड की शक्तियां दे दी गई थी उसने उन्हे पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा देने का वायदा किया था और उसने वो पूरा किया था। जब वे पवित्रआत्मा की सामर्थ से भर गए वे जानते थे कि कौन उन पर आ गया है। इसका आगमन चिन्हों के साथ मे हुआ था इसलिए उन्होंने घोषणा की यीशु यहां पर है, क्योंकि पवित्रआत्मा यहां पर है!

- प्रशिक्षण पुस्तिका में पृष्ठ पर दिए अन्तिम पैरे और अगले पृष्ठ पर दिए गए पहले पैरे को पढ़ें।

परिणाम ? (1) **अतयन्त स्तुति बह रही थी**

''हम अपनी – अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के कामों की चर्चा सुनते है''– प्रेरित 2:11

(2) **निर्भिकता पूर्ण (साहस से भरा) प्रगटीकरण था**

''हे इस्राएलियों, इन बातों को सुनोः यीशु नासरी एक ऐसा मनुष्य था जिसको परमेश्वर ने सामर्थ के कार्य, आश्चर्यकर्मो, और चिन्हों से जो उसने उसके द्वारा तुम्हारे समक्ष किए तुम पर प्रकट किया जैसा कि तुम स्वंय जानते हो, इसी मनुष्य को जो परमेश्वर की पूर्व निश्चित योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया था, तुमने अधर्मियों के हाथों क्रुस पर कीलों से ठुकवाकर मार डाला, परन्तु परमेश्वर ने मौत की पीड़ा को मिटाकर उसे पुनः जीवित कर दिया क्योंकि मृत्यु के वश में रहना उसके लिए असम्भव था... इसलिए इस्राएल का सम्पूर्ण घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और ''मसीह'' दोनों ही ठहराया, इसी यीशु को जिसे तुमने क्रुस पर चढ़ाया''–प्रेरित 2:22–24, 36 ।

(3) **स्वीकारना और प्रत्युतर देना था**

''उन्होंने जब ये सुना तो उनके हृदय छिद गए और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, ''भाईयो, हम क्या करें''? पतरस ने उनसे कहा,'' मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुममें से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो और तुम पवित्रआत्मा का दान पाओगे'' – प्रेरित 2 : 37 ।

इसकी विशेषतांए **यीशु जहां हैं भरपूरी वहां है**

.....

''इसलिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर सर्वोच पद पाकर और पिता से पवित्रआत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त करके उसने इसे उंडेल दिया जिसे तुम देखते और सुनते भी हो' – प्रेरित 2:33

इस दिन के बाद से यीशु के अनुयायीयों में से किसी ने शक नहीं किया कि वे यीशु की प्रतिज्ञा के बाहर चलेगें, लंगड़े चंगे किए जाते थे, अन्धे देखने लगे, जिन्होंने यीशु को प्रभु करके ग्रहण किया वे बिल्कुल बदल गए और एक कलिसीया का जन्म हुआ जिसने एक पीढ़ी में संसार में क्राति ला दी।

क्या आप ''आँख को खोलने'' वाले के लिए तैयार हैं – यहून्ना 14:12

- यीशु ने ये प्रतिज्ञा अपनी मृत्यु, जी उठना, पवित्रआत्मा के दिए जाने से पहले की।

- कुछ पद ऐसे जान पड़ते हैं कि उन पर अधिक विश्वास किया जाए यह पद इस तरह है।

- क्योंकि वह बिल्कुल सपष्ट अपने चेलों से कहता है कि वे उन कामों को करेगें जो उसने किए बल्कि उससे भी बढ़कर!

- क्या ये सच हो सकता है? कैसे? पर यदि यीशु ने कहा है तो हो सकता है, वह हमेशा सच बोलता है।

- इसका उत्तर उसके द्वारा बोले गए वाक्य में छिपा हुआ है, ''क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूं।'' यह संकेत उसने अपने चेलों को दिया था... जब वह अपने पिता के पास वापस पहुचा तो पवित्रआत्मा उंडेल दिया। आत्मा ने उन्हें योग्यता दी कि वे उसके जैसे वरन उससे भी बढ़कर काम करें।

ये मनुष्य का करना नहीं है! ये पवित्रआत्मा है जो निडर, अनपढ़ चेलों को इस्तेमाल कर रहा है, जिन्हेांने यीशु पर विश्वास किया जो उसने कहा, वरदान को प्राप्त किया और उसी सामर्थ में चलने लगे और वैसी ही सेवकाई करने लगे जो यीशु ने जब वह इस देह में था की।

''आँखों को खोलने वाला'' **यहून्ना 14:12**

''मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम मुझ पर विश्वास करो तो वही काम करोगे जो मैं करता हूं, वरन् इससे भी बड़े काम करोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं'' (नये नियम की आज की भाषा, बैंक के द्वारा)

''क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं''

यीशु मसीह में पवित्रआत्मा की सेवकाई और एक विश्वासी के जीवन में पवित्रआत्मा की सेवकाई में भिन्नता हैः

यहून्ना 3:34 .....**''बिना किसी मात्रा या असीमत मात्रा''**.....

''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा हैं वह परमेश्वर की बाते करता है क्योंकि वह बिना किसी नाप के उसे आत्मा देता है''।

1कुरिन्थियों 12:7;11 .....**''पवित्रआत्मा निर्धारित करता है कि हमें**

किस प्रकार का दान और सामर्थ प्रदान करें ।''.....

.....

परन्तु प्रत्येक को सबकी भलाई के लिए आत्मिक वरदान दिया जाता है... परन्तु वही एक आत्मा ये सब काम करवाता है और अपने इच्छानुसार जिसे जो चाहता है अलग अलग बांट देता है।

''तुम'' व्यक्तिगत नहीं – पर ''तुम'' एकत्रित रूप में ।

फिर भी हमें इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि यीशु के जीवन में पवित्रआत्मा की सेवकाई और एक विश्वासी के जीवन के द्वारा उसकी सेवकाई में एक बहुत बड़ी भिन्नता है।

- यहून्ना 3:34 कहता है कि पवित्रआत्मा यीशु के जीवन में **बिना किसी मात्रा या असीमत मात्रा** सें था क्योंकि परमेश्वर का आत्मा उस पर बिना किसी सीमा के था।

- परन्तु 1कुरि. 12:7 मे हम पाते हैं कि हम सभी की भलाई के लिए हममें से हरेक को पवित्रआत्मा के वरदान दिए गए है और यही आत्मा सबों को सभी तरह के दान और सामर्थ अपनी इच्छा के अनुसार जैसा चाहता है वैसा दे देता है।

- इसलिए हमारे हालातों मे **पवित्रआत्मा निर्धारित करता है कि हमें किस प्रकार का दान और सामर्थ प्रदान करें ।**

- पवित्रआत्मा वहां मौजूद था और यीशु के जीवन मे बिना किसी नाप के अपनी सामर्थ का इस्तेमाल कर रहा था। परन्तु हमारे जीवन में पवित्रआत्मा एक विश्वासी को सभी तरह के दान और सभी तरह के वरदान हमेशा के लिए नहीं देता। परन्तु पवित्रआत्मा यह निर्धारित करता है कि कौन सा दान हमें चाहिए और कब हमें इसकी जरूरत है जिसे वह ''उसकी इच्छा'' के अनुसार देता है।

- इसका परिणाम यह होता है कि हम सभी मिलकर अपने–2 वरदानों का इस्तेमाल पवित्रआत्मा की सामर्थ में होकर मसीह की देह में करते हैं। हम मसीह जैसे कामो को बल्कि उससे बढ़कर करते हैं ।

जब यीशु ने यहून्ना 14:12 में प्रतिज्ञा की – ''... यदि तुम मुझमे विश्वास करो तुम भी यह करोगे...'' यीशु किसी एक के बारे में नहीं कह रहा था बल्कि हम सभी के लिए कह रहा था।

- जैसे तुम इक्टठे मेरे प्रेम को इस धरती पर प्रकट करते हो, वैसे ही तुम इक्टठे मिलकर बड़े कामों को करोगे।

- यदि यीशु ने किसी एक को ही जैसा उसके पास था एक ही अनुपात में सारे वरदान दे दिए होते तो जरा सोचिए कितना बड़ा धमण्ड और अराजकता का सामना हमें करना पड़ता।

- हममें से कुछ अभी भी बहुत धमण्डी है। क्या होता यदि हम हरेक ''छोटे यीशु'' होते?

- नहीं, यीशु की योजना इस धरती पर एक नए शरीर को ओढ़ लेने की थी। यह एक शरीर होगा पर इसके कई हिस्से होंगे और तब इस शरीर के द्वारा वह सभी कामों को करेगा और यहां तक कि बड़े कामो को भी। वह हमें एक देह बनाना चाहता था, जो एक दूसरे पर और पवित्रआत्मा पर निर्भर हो और तब पवित्रआत्मा उस देह के द्वारा यीशु की तरह सेवकाई करे।

इसलिए उसने कहा कि तमु मेरे संदेश को सारी दुनिया में ले जाओंगे और मेरे राज्य को प्रकट करोगे परन्तु तुम्हें पहले पवित्रआत्मा पाना जरूरी है तब तुम जा सकते हो और कर सकते हो।

ये मनुष्य का करना नहीं है! ये पवित्रआत्मा है जो निडर, अनपढ़ चेलों को इस्तेमाल कर रहा है, जिन्होंने यीशु पर विश्वास किया जो उसने कहा, वरदान को प्राप्त किया और उसी सामर्थ में चलने लगे और वैसी ही सेवकाई करने लगे जो यीशु ने जब वह इस देह में था की।

''आँखों को खोलने वाला'' **यहून्ना 14:12**

''मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि तुम मुझ पर विश्वास करो तो वही काम करोगे जो मैं करता हूं, वरन् इससे भी बड़े काम करोगे क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं'' (नये नियम की आज की भाषा, बैंक के द्वारा)

''क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं''

यीशु मसीह में पवित्रआत्मा की सेवकाई और एक विश्वासी के जीवन में पवित्रआत्मा की सेवकाई में भिन्नता हैः

यहून्ना 3:34 .....**''बिना किसी मात्रा या असीमत मात्रा''**.....

''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा हैं वह परमेश्वर की बाते करता है क्योंकि वह बिना किसी नाप के उसे आत्मा देता है''।

1कुरिन्थियों 12:7;11 .....**''पवित्रआत्मा निर्धारित करता है कि हमें किस प्रकार का दान और सामर्थ प्रदान करें ।''**.....

.....

परन्तु प्रत्येक को सबकी भलाई के लिए आत्मिक वरदान दिया जाता है... परन्तु वही एक आत्मा ये सब काम करवाता है और अपने इच्छानुसार जिसे जो चाहता है अलग अलग बांट देता है।

''तुम'' व्यक्तिगत नहीं – पर ''तुम'' एकत्रित रूप में ।

(पढ़िये मती 3:1—17 और लूका 4:1—14)

1. मती 3:16 में यीशु ने कौन से दो बपतिस्में लिए?

2. यीशु ने क्यों आश्चर्यकर्म और अद्भुत काम किए या महान शिक्षा दी या दूसरे लोगों से भिन्न दिखा जब तक कि वह यरदन नदी पर यहून्ना से न मिला।

3. मती 3:11 और प्रेरित 1:5 की तुलना कीजिए

   मती 3:11 में कौन बोल रहा है ?.....

   प्रेरित 1:5 में कौन बोल रहा है ? .....

   कौन सी प्रतिज्ञा के लिए दोनों बोल रहे हैं ? .....

   कौन उनको इस प्रतिज्ञा का दान देगा ? .....

(पढ़िये लूका 24:44—53 और प्रेरित 1:1—5 और 8)

4. वापस स्वर्ग जाने से पहले यीशु क्या निश्चित आज्ञा चेलों को देता है ? (प्रेरित 1:4)

5. उसने कौन सा दान देने की प्रतिज्ञा की? लूका 24:49

6. चेलों को पवित्रआत्मा का दान लेने के लिए जहां थे वहीं ठहरना पड़ा। इससे पहले कि संसार में वे उसके गवाह बन जांए।

7. आप क्या सोचते हो क्या हुआ होता यदि संसार में गवाही देने के पहले वे वहां न ठहरते ?

इस पृष्ठ के पीछे

(सावधानी से पढ़ें , प्रेरित 2:1–21 और यहून्ना 37:39)

ऐसा सोचिये कि आप उन 120 में से एक हैं जो यीशु के चेले या पीछे चलने वाले थे जैसा इन पदों में वर्णन किया गया है। इन पदों में पढ़ने के बाद, कहानी लिखिए कि यदि आप वहां होते तो वहां क्या होता।

जब आप कहानी लिखें, ये प्रश्न अपने से पूछें :

हम यदि उस दिन यरूश्लेम में होते तो हमारे क्या हालात होते?
मैंने क्या सुना और क्या देखा?
मैंने कैसा महसुस किया?
क्या मैं खुश था? क्यों?
मेरे साथ ये सब कुछ क्या हुआ?

पहला

पिछले अधिवेशन 6 के प्रश्न पत्र को स्थापना के अधिवेशनों में देखिए।

तब

थोड़ा समय इस बात को निश्चय कर लेने मे बिताईये कि समूह के सदस्य प्रभु के जीवन में पवित्रआत्मा की सेवकाई और आज के हमारे जीवनों में पवित्रआत्मा की सेवकाई की भिन्नता को समझ सकें। सम्वतः नीचे दिए गए प्रश्नों पर चर्चा की जा सकती है।

1. यीशु मसीह ''मे'' पवित्रआत्मा उसके जन्म के समय से था पर '' ''उस पर'' उस समय तक नहीं था जब तक उसका बपतिस्मा नहीं हो गया। हमारे जीवन में आज पवित्रआत्मा के साथ सम्बन्ध की यीशु के जीवन के साथ क्या समानता है? आज हमारे जीवन मे पवित्रआत्मा के काम की यीशु के जीवन के साथ क्या समानता है

2. आप क्यों साचते हैं कि पिता ने ये चुना कि यीशु को पवित्रआत्मा की सामर्थ और उसके दान पर निर्भर करें जैसा हमारे साथ भी हैं?

   अगुवों की टिप्पणी : इस वार्तालाप में धर्मशास्त्र के इन सदर्भों को देखें जैसे : फिलिप्पयों 2:5—11
   इब्रानियों 2:17—18
   इब्रानियों 4:15
   इब्रानियों 5:7—9

3. यहून्ना 14:12 को साथ—साथ देखें। क्या आप विश्वास करते हैं कि यीशु ने कहा वह क्या मतलब रखता है? ये कैसे सम्भव हो सकेगा?

4. आप यहून्ना 3:34 और 1 कुरिन्थियों 12:7—11 में क्या अन्तर देखते हो। यीशु के जीवन में पवित्रआत्मा की उपस्थिति के बीच और आज मसीह के देह के सदस्यो के जीवन की गतिविधियों में क्या अन्तर है?

अन्त में

किसी प्रश्न को लेकर वार्तालाप जारी रखें जो समूह के सदस्यों के पास हो, फिर भी स्मरण रखिए कि अगला शिक्षण पवित्रआत्मा का बपतिस्मा किस प्रकार पाना चाहिए के बारे में अगले सप्ताह बताया जाएगा।

अगले सप्ताह के लिए

''सामर्थी बनाना'' वाले अधिवेशन एक के प्रश्नों को पूरा करें। निश्चय करें कि अन्तिम प्रश्न पत्र के पृष्ठ की पिछली ओर है।